International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.11 No.1 Sept-Oct 2023

देश की प्रगति में महिलाओं का विशेष योगदान

श्रीमति कांति सिंह काठेड़
पुस्तकालयाध्यक्षए स्वामी विवेकानंद शासकीय वाणिज्य महाविद्यालय, रतलाम
Corresponding Author- श्रीमति कांति सिंह काठेड़
DOI- 10.5281/zenodo.10043216

सार :
भारतवर्ष एक संपन्न पारंपरिक और सांस्कृतिक मूल्यों से समृद्व देश है। यहॉ महिलाओं का समाज में प्रमुख स्थान है। प्राचीन काल से ही भारतीय महिलायें उर्जा से लबरेज, दूरदर्शिता, उत्साहित जीवन और प्रतिबद्वता संकल्प के साथ सभी चुनौतियॉ का सामना करने में सक्षम हैं। महिलायें देश के विकास में हर क्षेत्र में योगदान दे रही हैं। एक राष्ट्र तभी सशक्त बन सकता है, जब उसका हर नागरिक सशक्त हो और राष्ट बनाने में महिलाओं की भूमिका का असर सबसे अधिक होता है। कयोकि महिलाआ एक मॉ के रुप में अपने परिवार को उठाने एवं संगठित रखने में एक विशेष भूमिका निभाती है। इसी प्रकार महिलायें सभी क्षेत्रों में अपना विशेष योगदान देकर देश को आगे बढाने एवं संगठित रखने में अपना विशेष योगदान दे रही हैं।

की वर्डस् : महिला शक्ति, महिला योगदान, विज्ञान, साहित्य संगीत, राजनीति

विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान:

बीते कुछ वषो से महिलायें अलग अलग क्षेत्रों अपना विशेष योगदान दे रही हैं। इसी कड़ी में महिलायें विज्ञान के क्षेत्र में भी योग्यता के अनुसार तेजी से उभर रही हैं। महिलाओं ने गगनयान, मंगल मिशन से लेकर इसरो के तीनों चंद्रयान अभियानों में अपनी काबिलियत का लोहा मनवाया है। महिला वैज्ञानिक अंतरिक्ष विज्ञान में ही नही, मिसाईलों के क्षेत्र में भी विशेष योगदान दे रही हैं। महिलाओं के सामने तमाम तरह की चुनौतियों के बावजूद इसरों में चंद्रयान मिशन हो या फिर मंगल मिशन की सफलता, नासा से लेकर नोबेल पुरस्कार तक हर क्षेत्र में हमारी महिला वैज्ञानिकों ने अपना लोहा मनवाया है। यहॉ पर हम विज्ञान की जादुई दुनिया में अपना परचम लहराने वाली महिला वैज्ञानिकों के बारे में जानेगें। इन्होने सामाजिक बेड़ियो को तोड़कर विज्ञान की दुनिया में कीर्तिमान स्थापित किया है।

जानकी अम्माल : ये वनस्पतिशास्त्र की वैज्ञानिक थी। इन्होने गन्ने की हाईब्रिड प्रजाति की खोज की थी और क्रास ब्रीडिंग पर शोध किया था। जिसे पूरी दुनिया में मान्यता प्राप्त हुई। इनके इस योगदान के लिये वर्ष १९५७ में पद्मश्री से सम्मानित किया गया था।

आनंदी बाई जोशी : यह भारत की पहली महिला थी जिन्होने विदेश में डॉक्टर की डिग्री हासिल की थी। इन्होने भारतीय चिकित्सा विज्ञान और स्वास्थ्य के क्षेत्र में काफी योगदान दिया था। परन्तु बीमारी के चलते इनका निधन २२ वर्ष की उम्र में हो गया था।

आसीमा चटर्जी : यह भारत की पहली महिला थी जिन्होने विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट ऑफ साइंस की उपाधि प्राप्त की थी। इन्होने कैंसर चिकित्सा, मिर्गी और मलेरिया रोधी दवाओं के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अन्नमणि : ये एक मौसम वैज्ञानिक थी। इन्होने सौर विकीरण और ओजोन परत और वायु उर्जा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया था।

किरण मजूमदार शॉ : इन्होने जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अहम योगदान दिया। इन्होने मधुमेह, कैंसर और आत्म प्रतिरोधी बीमारियों पर शोध किया साथ ही एंजाईम के निर्माण के लिये एकीकृत जैविक दवा कंपनी बायोकॉन लिमिटेड की स्थापना की थी।

मुथैयावनिता : ये भारत के दूसरे चंद्रयान मिशन की प्रोजेक्ट डायरेक्टर थी। इन्हे वर्ष २००६ में सर्वश्रेष्ठ महिला वैज्ञानिक के पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

रितु करीधन : ये भारत के पहले चंद्रयान मिशन की डिप्टी आपरेशंस डायरेक्टर रह चुकी हैं। साथ ही चंद्रयान २ मिशन की डायरेक्टर रह चुकी हैं। वर्ष २००७ में यंग साइंटिस्ट अवार्ड से सम्मानित किया गया।

टेसी थॉमस : भारत की मिसाईल महिला और अग्निपुत्री के नाम से मशहूर टेसी थॉमस ने डीआरडीओ में अपने काम से सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया था। इन्होने भारत की रक्षा प्रणाली को मजबूत करने में योगदान दिया था।

कल्पना चावाला : कल्पना चावला अंतरिक्ष में जाने वाली भारतीय मूल की महिला थी। ये अंतरिक्ष में ३७६ घंटे ३४ मिनिट तक अंतरिक्ष में रही। इस दौरान इन्होने धरती के २५२ चक्कर लगाये थे। परन्तु १ फरवरी २००३ को हुई अंतरिक्ष इतिहास की एक मनहूस दुर्घटना में कल्पना चावला सहित सात अन्य अंतरिक्ष यात्रियों की मौत हो गई।

संगीत के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान:

लता मंगेशकर : लता मंगेशकर भारतीय संगीत की सबसे लोकप्रिय गायिका थी। इन्होने संगीत की दुनिया में छःह दशक तक अपना संगीत दिया तथा कई भाषाओं में गाने गाये। इन्हे फिल्मफेयर पुरस्कार, राष्ट्रीय पुरस्कार, पद्मविभूषण, गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड, दादा साहब फाल्के पुरस्कार, फिल्मफेयर का लाईफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड, राजीव गॉधी पुरस्कार, भारत रत्न, डॉटर ऑफ द नेशन से सम्मानित किया।

गीता दत्त : ये भी विख्यात भारतीय गायिका थी। इनकी पहचान एक पार्श्व गायिका के रुप में है। इन्होने भारतीय फिल्मों में हिन्दी और बंगाली भाषा में बहुत ही प्रसिद्व गाने गाये हैं। इन्होने लगभग तीन दशक तक अपनी आवाज के जादू से श्रोताओं का दिल जीत लिया था। इन्हे किन्ही कारणों से फिल्म फेयर नही मिला परन्तु इन्हे इनकी गायकी के लिये कुछ पुरस्कार अवश्य प्राप्त हुये थे।

बेगम अख्तर : ये भी विख्यात भारतीय गायिका थी। इन्हे दादरा, ठुमरी और गजल में महारथ हासिल थी। इन्हे कला के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा पदमश्री तथा मरणोपरान्त पद्मविभूषण से सम्मानित किया गया था। इन्हे मल्लिका ए गजल के खिताब से नवाजा गया था।

भारतीय साहित्य में महिलाओं का योगदान:

भारत देश की प्रसिद्व भाषा में हिन्दी भाषा का नाम सर्वश्रेष्ठ हैं। भारतीय साहित्य में कुछ प्रसिद्व लेखिकाओं ने अपना जीवन केवल साहित्य लिखने में ही समर्पित कर दिया है। इन प्रसिद्व महिलाओं ने साहित्य के द्वारा नारीवाद रचनाओ के द्वारा महिलाओं के जीवन को प्रभावित करने वाले मुद्दों पर विचार व्यक्त किये एवं अपना विशेष योगदान दिया।

महादेवी वर्मा : इन्हे आधुनिक युग की मीरा के नाम से भी जाता जाता है। ये एक प्रसिद्व कवयित्री तथा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भी थी। इन्होने महिलाओं के जीवन, प्राकृतिक दुनिया अन्य महत्वपूर्ण विषयों के साथ बड़ी संख्याओं में कविताओं और लघु कथाओं का भी निर्माण किया था। इन्होने भारतीय महिलाओं के जीवन के कई मुद्दों को संबोधित करने वाली गद्य रचनायें भी लिखी।

कृष्णा सोबती : ये अपनी दुस्साहसिक भाषा और आवाज के लिये प्रसिद्व हिन्दी साहित्य की एक निडर उपन्यासकार हैं। इन्होने महिलाओं पर अत्याचार करने वाले पारंपरिक मानदंडो की आलोचना की थी। इन्हे इनके काम शिंदगीनामाश के लिये १९९० में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था।

मन्नू भंडारी : हिन्दी साहित्य में उल्लेखनीय योगदान के साथ ये एक संवाद और कथा लेखिका भी थी। इनके लेखन में भारत में एक दमनकारी संस्कृति के साथ साथ इसके नैतिक और सांस्कृतिक आदर्शो के माध्यम से एक महिला की यात्रा को दर्शाया गया है।

मृणाल पांडे : ये एक भारतीय टेलीवीजन व्यक्तित्व होने के साथ साथ एक पत्रकार और लेखिका भी हैं। ये एक सफल लेखिका हैं जो हिन्दी और अंग्रेजी दोनो भाषाओं में लिखती हैं। इनकी रचना पुरुष प्रधान समाज को चुनौती देने वाली शक्तिशाली महिला स्वरों का एक संग्रह है।

गीतांजली श्री : ये एक भारतीय भाषा की उपन्यासकार और लघु कथा लेखिका हैं। ये भारत की पहली लेखिका हैं जिन्हे अंतराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार से

सम्मानित किया गया है। भारत के विभाजन की छाया में स्थापित एक पारिवारिक नाटक अपनी पुस्तक श्रेत समाधिश में अपने पति के निधन के बाद एक ८० वर्षीय महिला का अनुसरण करती है। ५०,००० पाउंड की पुरस्कार शॉर्टलिस्ट में लिखी गयी इनका पहली उपन्यास है।

भारतीय राजनीति में महिलाओं का योगदान:

भारतीय राजनीति में प्राचीन समय से ही महिलाओं का योगदान रहा है। समय के साथ साथ हर राजनीतिक दल में महिलाओं की विशेष भूमिका रही है। वर्तमान दौर में भारतीय राजनीति में महिलायें अग्रणी हैं।

प्रतिभा देवी पाटिल : ये भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति बनी और इन्होने अपने कार्य से साबित किया कि महिलायें नीति निर्णायक मुद्दों पर भी आगे रह सकती हैं।

द्रौपदी मुर्मू : भारत के राष्ट्रपति के रुप में चुने जाने वाली जनजाति समुदाय से संबंधित पहली महिला हैं। देश की सबसे कम उम्र की राष्ट्रपति हैं। स्वतंत्र भारत में पैदा होने वाली **देश की पहली आदिवासी राष्ट्रपति व दूसरी महिला राष्ट्रपति** बनी।

इंदिरा गॉधी : ये भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री बनी। इन्हे आयरन लेडी के नाम से भी संबोधित किया जाता है। वर्ष १९६६ से १९७७ तक लगातार तीन पारी के लिये भारत की प्रधानमंत्री रही।

मीरा कुमार : ये पहली भारतीय संसद में लोकसभा की पहली महिला अध्यक्ष बनकर इन्होने नई ईबारत लिखी।

निर्मला सीतारमण : ये भारत की वित्तमंत्री हैं। इस पद के पहले रक्षामंत्री के पद पर भी कार्य कर चुकी हैं।

भारतीय उद्योगो में महिलाओं का योगदान:

भारतीय उद्योग अब विश्वभर में डंका बजा रहा है। भारतीय उद्योग बढने से भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली है। वर्तमान समय में हमारी देश की महिलाओं ने उद्योगो को बढाने के लिये विशेष योगदान दिया है।

कल्पना सरोज : यह भारत की पहली महिला उद्यमी हैं। ये कमानी ट्यूब्स की अध्यक्षता करती हैं।

वंदना लूथरा : ये देश के सबसे बड़े और प्रतिष्ठित भारतीय उद्यमियों में से एक हैं। ५० पावर बिजनेस वुमन्स के फोर्ब्स एशिया की सूची में लूथरा को २६वां स्थान प्राप्त है। इनके द्वारा स्थापित वीएलसीसी देश के सर्वश्रेष्ठ सौन्दर्य और कल्याण सेवा उद्योगो में से एक हैं।

किरण मजूमदार शॉ : ये एक भारतीय उद्यमी और आई आई एम, बैंग्लोर की संस्थापक और अध्यक्ष हैं। साथ ही बायोटेक्नालॉजी कंपंनी बायोकॉन लिमिटेड की चेयरमेन और प्रबंध निदेशक हैं।

नैनालाल किदवई : भारत की सबसे सफल और मशहुर महिलाओं में नैनालाल किदवई भी शामिल हैं। ये पेशे से चार्टेड एकाउन्टेंट हैं और एचएसबीसी बैंक की भारत प्रमुख रह चुकी हैं। ये फिक्की की अध्यक्ष भी हैं।

सुचि मुखर्जी : सुचि लाईमरोड की फाउंडर और सीईओ हैं। इन्हे लाईमरोड का विचार तब आया जब वे अपने मातृत्व अवकाश में थी। इन्होने २०१२ में कुछ लोगों के साथ मिलकर इस कंपनी की नींव रखी। लाईमरोड में अब निफ्ट डिजाईन ग्रीक्स के लिये २००. प्ज. जमबीपमे की मजबूत टीम है। इस कंपनी का सकल व्यपारिक मूल्य अब उनके लॉच के बाद से बड़े पैमाने पर ६००: बढ गये हैं।

निष्कर्ष :

प्रचीन काल से लेकर वर्तमान समय में महिलाओं ने अपना योगदान विभिन्न क्षेत्रों में दिया है। वर्तमान में ऐसा कोई भी क्षेत्र नही है, जिस पर महिलाओं का योगदान न हो। महिलायें अब दृढ शक्ति और मजबूती से हर क्षेत्र में आगे बढ रही हैं। आज की महिला अब जागृत और सक्रिय हो चुकी हैं। किसी ने एक बहुत अच्छी बात कही है जब महिला अपने ऊपर थोपी हुई बेड़ियॉ एवं कड़ियों को तोड़ने लगेगी तो विश्व की कोई शक्ति उसे रोक नही पायेगी। महिलाओं ने रुढिवादी बेड़ियो को तोड़ना शुरु कर दिया है। इस कारण से वे विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

संदर्भ :

1. https://www.hindikiduniya.com
2. https://www.drishttians.com
3. https://www.bbc.com
4. http://en.wikipedia.org